जिसमें गीत-संगीत स्पष्ट सुनाई देते हैं। पहले शॉर्ट वेव और मीडियम वेव तकनीक से प्रसारण हुआ करता था। ट्रांजिस्टर रेडियो के बाजार में आने के पूर्व डायोड वाले रेडियो सेट ही प्रचलित थे। उन पर आवाज स्पष्ट सुनाई नहीं देने के कारण संगीत का सारा आनंद किरकिरा हो जाता था। पचास के दशक के उत्तरार्द्ध में ट्रांजिस्टर रेडियो बाजार में आया जिसको बैटरी से चलाया जाता था और उसके लिए बिजली के कनेक्शन की जरूरत नहीं होती थी। इन नये रेडियो सेटों को कभी भी, कहीं भी ले जाया जा सकता था और अपने मनपसंद गीत-संगीत सुने जा सकते थे। लगभग इसी समय विविध भारती का गठन हुआ। ट्रांजिस्टर रेडियो की बढ़ती उपलब्धता से विविधभारती की लोकप्रियता को तो जैसे पंख लग गए। यहां यह तय करना मुश्किल है कि विविध भारती के कारण ट्रांजिस्टरों की लोकप्रियता बढ़ी या ट्रांजिस्टरों के कारण विविध भारती की। इन दोनों के तालमेल से विविध भारती ने भारतीय जनमानस में अपनी जगह पुख्ता कर ली। रेडियो सीलोन के कार्यक्रम शॉर्ट वेव पर प्रसारित होते थे, जिनको सुनने के लिए महंगे रेडियो सेटों की आवश्यकता होती थी। शॉर्ट वेव का प्रसारण ठीक से सुनने के लिए घरों में खुली जगह पर जाली वाले ऐन्टेना और अर्थिंग का प्रबंध करना होता था। लेकिन ट्रांजिस्टरों के आने के बाद इन सब झंझटों से छुटकारा मिल गया और फिर बाद में तो ट्रांजिस्टर रेडियो इतने छोटे आकार के आने लगे कि इनको जेब में रखकर कहीं भी गीत-संगीत सुना जा सकता था। इससे गांवों, कस्बों और शहरों के गरीब और निम्न मध्यमवर्गों में रेडियो काफी लोकप्रिय हो गया। विविध भारती के गीत संगीत की लोकप्रियता में इन्हीं वर्गों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। प्रसारण तकनीक की सहजता, साधन की सहजता और भारतीय फिल्मों के गीत संगीत के माधुर्य ने विविध भारती को जन-जन तक पहुंचा दिया।

विविध भारती की स्थापना का एक और महत्वपूर्ण कारण था। तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री बी वी केसकर शास्त्रीय संगीत के प्रेमी थे। वे रेडियो पर फिल्मी संगीत के प्रसारण को उचित नहीं मानते थे। उनका विचार था कि फिल्मी गीतों के प्रसारण से युवा पीढ़ी पर बुरा असर पड़ेगा और स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र निर्माण के प्रयासों से जुड़ने के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करने में दिक्कत होगी, इसलिए उन्होंने आकाशवाणी पर फिल्मी संगीत के प्रसारण पर सीमित प्रतिबंध सा लगा रखा था। एक निश्चित समय पर ही रेडियो पर चुने हुए फिल्मी गीत सुने जा सकते हैं।

उधर रेडियो सीलोन की लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती जा रही थी। भारत के उद्योग एवं व्यापार जगत ने अपने प्रचार के लिए रेडियो सीलोन को अपना प्रमुख साधन बना रखा था। उन विज्ञापनों के जरिए रेडियो सीलोन अच्छी खासी आय अर्जित कर रहा था। ताजा फिल्मी गीतों के जरिए श्रोताओं के बीच रेडियो सीलोन ने अपनी जगह मजबूती से बना रखी थी। अपने व्यावसायिक हितों के साथ-साथ वह अपने कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा था।

इसी से प्रेरित होकर भारत के कुछ प्रसारण मनीषियों ने स्वदेशी केन्द्रों से फिल्म संगीत के प्रसारण से व्यावसायिक हित साधने की सोची। केशव पाण्डेय, पंडित नरेन्द्र शर्मा और गिरिजा कुमार माथुर जैसे प्रसारण दिग्गजों ने विविध भारती के रूप में अपनी इस परिकल्पना को साकार रूप देने का प्रयास किया और आकाशवाणी की मनोरंजन सेवा की स्थापना की। इसके बारे में कहा जाता था कि यह आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम-विविध भारती है। इसका अर्थ था कि इसमें ललितकलाओं की पांचों विधाओं का समावेश है।

तीन अक्टूबर 1957 को आकाशवाणी के मुंबई केन्द्र से विविध भारती का आगाज़ लोकप्रिय उद्घोषक शील कुमार शर्मा के स्वर में हुआ। उन्होंने कहा कि यह विविध भारती है, आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम। प्रारम्भ में इसका प्रसारण केवल दो केन्द्रों मुंबई और मद्रास (अब चेन्नई) से ही होता था। बाद में धीरे-धीरे लोकप्रियता के चलते अन्य केन्द्रों से भी इसका प्रसारण होने लगा। वर्तमान में अनेक केन्द्र आकाशवाणी की विज्ञापन प्रसारण सेवा के रूप में अपने श्रोताओं को विविध भारती के कार्यक्रम सुनाते हैं। वर्षों तक यह भारत के असंख्य हिन्दीभाषियों का चहेता रेडियो चैनल बना रहा। दूरदर्शन के आगमन से इसकी लोकप्रियता पर कुछ असर अवश्य पड़ा पर एफ एम केन्द्रों पर इसका प्रसारण शुरू होने से इसकी लोकप्रियता पुनः वापस लौट आई है।

विविध भारती पर प्रसारित पहले गीत की पंक्तियां थी-नाच रे मयूरा/खोलकर सहस्र नयन/देख सघन गगन मगन/देख सरस स्वप्न जो कि आज हुआ पूरा। प्रसिद्ध कवि और गीतकार पंडित नरेन्द्र शर्मा ने इसे विशेष रूप से इसी अवसर के लिए लिखा था। प्रसिद्ध गायक मन्नाडे ने इसे स्वर दिया था, जबकि संगीत निर्देशन अनिल बिस्वास का था। विविध भारती की लोकप्रियता पहले प्रसारण के साथ ही दिन दोगुनी रात चौगुनी बढ़ती गई और वह समय आ गया जब लोग रेडियो सीलोन को भूलने लगे। उद्योग जगत ने भी सीलोन का साथ छोड़कर विविध भारती का हाथ थाम लिया। रेडियो सीलोन पर धीरे-धीरे भारतीय फिल्मों के गीत और विज्ञापनों का प्रसारण बंद हो गया। इस प्रकार रेडियो विज्ञापन पर उसका एकाधिकार भी समाप्त हो गया।

मनोरंजन के एक चैनल के रूप में विविध भारती ने न केवल देश के करोड़ों श्रोताओं का दिल बहलाया है, बल्कि फिल्म संगीत से जुड़ी तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं और तथ्यों के दस्तावेज भी तैयार किए हैं। साहित्य, शास्त्रीय संगीत, नाटक और सिनेमा से जुड़ी अनेक घटनाओं और प्रस्तुतियों का व्यापक कोश भी तैयार किया है। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन और गोपालदास नीरज से लेकर आज के युग के अनेक लोकप्रिय कवियों की आवाजों में उनकी रचनाएं सुरक्षित रूप से संरक्षित हैं। उर्दू साहित्य के अली सरदार जाफरी, इस्मत चुगताई, से